संगम काल (100-300AD): राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, समाज एवं धर्म

भाग:-3

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

चोल राजवंश (Chola dynasty)

चोल राज्य दक्षिण भारत में सर्वाधिक शक्तिशाली और विस्तृत राज्य था| इस वंश की प्रथम जानकारी कात्यामन की वर्तिका से मिलती है| इसके अलावा महाभारत, संगम साहित्य, पेरिप्लेस ऑफ दि एरिथ्रियन सी आदि में भी इसका वर्णन है| चोल राज्य पूर्वी तमिलनाडु में पेन्नार तथा वेल्लारू नदियों के मध्य स्थित था|

चोलों का प्रतीक चिन्ह बाघ था| इनकी प्रारंभिक राजधानी उत्तरी मनलूर थी| बाद में उरैयूर तथा तंजाबुर भी राजधानियां बनाई गई| उरैयूर कपास के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था| प्रथम चोल शासक इलजेतचेन्नी था| यह एक वीर तथा महान योद्धा था इसे अनेक सुंदर रथों वाला बताया गया है| इसी ने उरैयूर को राजधानी बनाया|

चोल राजाओं में कारिकाल प्रमुख है| इसका कार्यकाल लगभग 190 माना जाता है कारिकाल का शाब्दिक अर्थ होता है जले टांगेवाला| इसे सात स्वरों का ज्ञाता भी कहा जाता है| इसने चोलों की तटीय राजधानी पुहार की स्थापना की तथा कावेरी नदी के किनारे 160 किलोमीटर लंबा बांध बनवाया| तंजौर के निकट वेन्नी के युद्ध में उसे अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई| इस युद्ध में उसने चेर एवं पांड्य राज्य के 11 राजाओं के समूह पर विजय प्राप्त की| उसकी दूसरी सफलता वाहैप्परन्दलइ का युद्ध था| इस युद्ध में उसने 9 राजाओं को पराजित किया| कारिकाल के बारे में प्रचलित है कि उसने कावेरी बांध श्रीलंका से लाये गए 12000 युद्ध बंदियों द्वारा बनवाया| वह ब्राहमण धर्म को मानने वाला था| उसने उद्योग, कृषि की उन्नति में विशेष रूचि ली|

इसने जंगल को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तन करके कृषि को प्रोत्साहन दिया तथा सिंचाई के लिए तालाब खुदवाये| चोल राज्य का अंतिम महान शासक नेडूजेलियन था|